शायद डरकर ले लिया

ISSN: 2583-8849
साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त2023 वर्ष1 अंक4

मेरा भारत बन सके, फिर से जगत महान ।
'माही' दिल पलता सदा, यही एक अरमान ।।-1

आएगा तूफान तो, मत घबराना यार ।
केवल थोड़े कर्ज का, और बढ़ेगा भार ।।-2

सभी स्वार्थ में जल रहे, उत्तरदायी कौन ।
झुलस रहा है आदमी, माही उत्तर मौन ।।-3

मानवता ही है सखे, मानव की पहचान ।
'माही' जिसमें है नहीं, वह कैसा इंसान ।।-4

मन में होना चाहिए, खुद पर ही विश्वास ।
माही तुम रखना नहीं, कभी किसी से आस ।।-5

जिस घर होती बेटियाँ, वो घर स्वर्ग समान ।
जिस घर में बेटी नहीं, जान उसे शमशान ।।-6

दिखा रहे थे कल तलक, जिनका भ्रष्टाचार ।
आज उन्ही के साथ में, बना रहे सरकार ।।-7

टूटे बाँध विकास के, बढ़ा कर्ज का भार ।
माही सत्ता लालसा, राजनीति का सार ।।-8

मेरे पावन देश का, घटता नित लालित्य ।
पक्षपात पर उतर गया, जबसे यह आदित्य ।।-9

तुम अँधियारे पक्ष में, खोजो नहीं प्रकाश ।
शायद डरकर ले लिया, चन्दा ने अवकाश ।।-10

अशोक कुमार महिश्वरे "माही"
पिता- स्व. श्री रामाजी महिश्वरे
जन्म तिथि- 25/05/1971
ग्राम- गुलवा, पो. बोरगांव, तह. - किरनापुर, जिला-बालाघाट(म.प्र.) 481115
शिक्षा- स्नातकोत्तर हिंदी एवं अंग्रेजी साहित्य
प्रकाशित कृतियाँ- लोकतंत्र तथास्तु (कहानी संग्रह) दोहांजली एवं भाव सुमन (दोहा संग्रह)
दूर ध्वनि क्र. 8964829898
अणुडाक- amahishware71@gmail.com